रोज़नामचा बनाम चिन्तन | एक शिक्षक की डायरी

गजेन्द्र कुमार देवांगन

26 जुलाई, 2019

आज काम की शुरुआत कुछ शारीरिक गतिविधियों से हुई। लगभग दस मिनट की गतिविधि से हम सब थक गए और गोला बनाकर बैठ गए। आज कुल पच्चीस बच्चे उपस्थित थे जिनमें से सोलह नवप्रवेशी थे। कल कुछ बच्चों से परिचय हुआ था परन्तु एक दिन में उनका नाम जान पाना सम्भव नहीं है। आज अनेक चेहरे बिल्कुल नए थे अतः उनका नाम जानना, परिचय करना पहली आवश्यकता थी। मैंने बहुत ही सहजता से अपना परिचय दिया। अपना नाम बताया और कहा कि आप मुझे 'गजेन्द्र टीचर' कह सकते हैं। बात आगे बढ़ाते हुए मैंने कहा, "आप तो मेरा नाम जान गए लेकिन यदि मुझे आपको बुलाना हो तो कैसे बुलाऊँगा? यदि आप लोग अपना नाम बता दें तो मैं आपको नाम से बुला सकूँगा।" इन बातों को मैंने बहुत ही सहजता से रखा। अब तक अनेक बच्चों को लग चुका था कि नाम बताना आवश्यक है। मुझे यक़ीन ही नहीं हो रहा था कि आज पहले ही दिन कुछ ऐसा भी होगा, मेरी बात ख़त्म भी नहीं हुई थी कि बच्चे खड़े होकर बारी-बारी से अपना नाम बताने लगे। यह सभी बच्चे आज ही इस विद्यालय में आए थे। मैं काफ़ी आश्चर्यचकित हुआ, मेरे अब तक के शिक्षकीय पेशे में आज पहला दिन था जब अनेक बच्चे बिना किसी इशारे व आग्रह के स्वयं से अपना नाम बता रहे थे।

बच्चों के इस तरह के व्यवहार के पीछे क्या कारण था? सही–सही बता पाना तो सम्भव नहीं है। परन्तु ऐसा लगता है इसका एक बड़ा कारण हमारा व्यवहार है। विद्यालय के शुरुआती दिनों में बच्चों के ठहराव व विद्यालय के प्रति आकर्षण बढ़ाने के लिए और वे अपेक्षित व्यवहार करें इसके लिए हमारा व्यवहार भी बच्चों की अपेक्षा के अनुरूप होना चाहिए। हमें यह समझने की ज़रूरत है कि एक बच्चे के लिए विद्यालय में सब कुछ नया है— भवन, साथी, वातावरण, शिक्षक, भाषा, विद्यालय की प्रक्रियाएँ इत्यादि। बच्चे फलते-फूलते हैं जब उनके अनुभवों व भाषा को स्थान दिया जाता है। कक्षा-कक्ष की ओर बच्चों को आकर्षित करने के लिए हमें उनकी भाषा में बात करनी चाहिए, उनके पास बैठना चाहिए, उनके साथ हँसी-मज़ाक करना चाहिए और उनकी समस्याओं के बारे में पूछना चाहिए। बच्चों को यह एहसास कराना आवश्यक होता है कि वह इस नई जगह में सुरक्षित हैं।

आज की एक दूसरी गतिविधि साझा करना चाहूँगा। बच्चों को लेखन हेतु स्लेट दी गई थीं। कुल छब्बीस स्लेट वितरित की गई थीं। लेखन अभ्यास पूरा होने के बाद सबसे स्लेट को एक जगह रखने का आग्रह किया गया था। लेखन अभ्यास कुछ अधिक समय तक हो गया था जिससे बच्चों में थोड़ी नीरसता आ गई थी। उन्हें ऊर्जावान बनाए रखने के लिए गतिविधि बदलना आवश्यक था।

मैंने बच्चों से कहा, "आपको देने से पहले मैंने स्लेट को गिना नहीं था, कितनी स्लेट हैं यह जानना आवश्यक है। तो चलो, गिनती करते हैं।" अब स्लेट बीच में थीं और हम सब चारों ओर गोल घेरे में बैठे थे। तय हुआ कि मैं एक–एक स्लेट उठाते जाऊँगा और सब गिनते जाएँगे। गिनती शुरू हुई। कई बार बच्चे गिन रहे होते और मैं स्लेट उठाकर रखना रोक देता था, यह सोचकर कि बच्चे गिनती जारी रखेंगे। लेकिन वह बहुत सजग थे। वह या तो दूसरे बच्चों को रोकते या मुझे स्लेट रखने को कहते। कुछ बच्चे क्रम से गिनती बोल नहीं पा रहे थे, अतः संख्या के नाम व संख्या में अन्तर हो रहा था। फिर बच्चों ने ख़ुद को सही किया और फिर से गिनना शुरू किया। बार–बार गिनती करते हुए जब हम छब्बीस की संख्या तक पहुँचते तो मैं कुछ बहाना बनाकर फिर से गिनने को कहता। ऐसा कई बार हुआ। आज की गिनती की प्रक्रिया अनेक बच्चों के लिए बड़ी चुनौती बन गई थी। वे सही–सही संख्या जानना चाहते थे। यह काम काफ़ी रोचक हो गया था। सभी बच्चों का ध्यान गिनती पर ही था। हमने दो–तीन बार अँग्रेज़ी में भी गिनती की।

इस पूरी गतिविधि की ख़ास बात यह थी कि बच्चे पूरे समय व्यस्त थे। दूसरी बात, उपयोग किया गया यह टीएलएम कोई आकर्षक व खर्चीली वस्तु नहीं थी। कक्षा में हमारा टीएलएम ऐसा होना चाहिए जिसे बच्चे छू सकें, दूर से देख सकें, स्वयं उपयोग कर सकें। टीएलएम मज़बूत और टिकाऊ होने के साथ-साथ बच्चों के लिए सुरक्षित और परिवेश में आसानी से उपलब्ध होने चाहिए।

यहाँ हमारा उद्देश्य गिनना था और हम चाहते थे कि बच्चे ठोस वस्तुओं को गिनना सीखें। बच्चों के साथ काम करते हुए एक दूसरी महत्त्वपूर्ण बात होती है हमारी प्रस्तुति शैली। शिक्षक अपनी भाषा, लहजे, अभिनय व कुशलता से किसी भी साधारण वस्तु को असाधारण बना लेता है। बच्चों सहित मुझे भी आज गिनती करने में बहुत मज़ा आया।

29 जून, 2019

आज पूरे दिन का काम योजना के अनुसार हुआ। विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से प्रयास किया गया कि प्रत्येक बच्चे को मैं भली-भाँति जान व पहचान सकूँ ताकि बच्चे भी विद्यालय को घर जैसा समझें, विभिन्न गतिविधियों में उन्हें मज़ा आए, उन्हें लगे कि वे विद्यालय में सुरक्षित हैं, उनकी बातों को सुना जाता है और उन्होंने अब तक जो सीखा है वह महत्त्वपूर्ण है।

आज दिन भर हुए काम कुछ इस प्रकार रहे।

मैं पहली कक्षा में पहुँचा। कुछ बच्चे कक्षा में खेल रहे थे। मैंने उनसे हाथ मिलाकर 'गुड मॉर्निंग' कहा। कक्षा की बैठक व्यवस्था ठीक करनी थी, अतः मैंने अन्य कक्षा के कुछ बच्चों को बुलाया और उनके सहयोग से दरी–गद्दों को ठीक किया। सभा पश्चात बच्चों को नाश्ते में 'चना' दिया जाना था। मैंने प्रत्येक बच्चे के पास जाकर यह सुनिश्चित किया कि वो चना दरी पर बिना गिराए खाएँ।

हम सब घेरा बनाकर खड़े हो गए। बच्चों ने कुछ शारीरिक गतिविधियों का अभ्यास किया— sit down, stand up, hands up, hands down, turn around आदि निर्देशों का पालन किया निर्देशों के क्रम को अचानक बदलकर बोलने से बच्चों को धोखा होता था जो कि उनके मज़े का कारण बनता था और वे ख़ूब ठहाके लगाकर हँस पड़ते थे। इस गतिविधि के बाद सभी घेरे में बैठ गए। इस दौरान 'आम की टोकरी', 'मोटूराम हलवाई' तथा 'गमला' कविताओं को समूह स्वर में पूरे जोश व अभिनय के साथ गाया गया। फिर मैंने उनसे बोर्ड की ओर मुँह करके बैठने का आग्रह किया और बोर्ड पर निम्नलिखित शब्द लिखे— 'गमला', 'नल', 'रस्सी', 'मछली' तथा 'घर'। अधिकांश बच्चे शब्दों को पढ़ पा रहे थे क्योंकि अनेक बच्चे पूर्व में किसी न किसी विद्यालय में जा चुके थे हालाँकि कुछ बच्चों के लिए यह शब्द बिल्कुल नए थे। अतः उनके लिए शब्दों के चित्र बनाकर नाम बोलने का अभ्यास किया गया व शब्द–चित्र के द्वारा पहचान बनाने का प्रयास किया गया।

अब तक बोलने–गाने में बहुत समय बीत चुका था और गतिविधि बदलने की आवश्यकता थी। बच्चों से बोर्ड में लिखे शब्दों व चित्रों को देखकर लिखने का आग्रह किया गया। बच्चों के लेखन के अवलोकन से ज्ञात हुआ कि कुछ ही बच्चों के लेखन स्पष्ट थे। मुझे लगा कि ज़्यादातर बच्चों के साथ लेखन पूर्व अभ्यास कराने की आवश्यकता है। यदि उन्हें ठीक से क़लम पकड़ना आ जाए, आकृतियों की समझ हो जाए तो लेखन करना सहज हो सकेगा। अभी बच्चों के लेखन में आकृति अनुसार बनावट में सुधार की बहुत आवश्यकता दिख रही थी। लेखन का अभ्यास बोर्ड में अनेक सरल चित्र बनाने तथा साथ ही साथ बच्चों की कॉपियों के अवलोकन के ज़रिए शुरू हुआ। अब तक के पूरे समय में लगभग एक घण्टे से अधिक समय बीत चुका था और कुछ बच्चे पानी पीने, शौचालय जाने की माँग कर रहे थे, अतः उन्हें पाँच मिनट के लिए जाने दिया गया।

अब गणित विषय को केन्द्र में रखते हुए काम शुरू किया गया। सबसे पहले समूह स्वर में एक से तीस तक मौखिक गिनती बोलने का अभ्यास हुआ, जो कि काफ़ी बार दुहराया गया। इसके पीछे मेरा उद्देश्य था, बच्चों को संख्या क्रम याद हो जाए व जो बच्चे गिनती बोलना जानते हैं उनका अभ्यास हो जाए। इसी दौरान हमने एक और गतिविधि की। हमने बड़े–बड़े मनकों (जोड़ो ज्ञान किट वाले) को गिनने का अभ्यास किया। हमने इन मनकों को एक ढेर बनाकर ज़मीन पर रख दिया। फिर मैंने समूह में से किन्हीं भी दो बच्चों को एक साथ सामने आने को कहा। एक बच्चे से कहा कि वह दोनों हथेलियों को जोड़कर फैलाकर रखे व दूसरा साथी ज़मीन से एक–एक मनका उठाकर पहले साथी की हथेली पर रखता जाए। शेष बच्चे जो इस काम को देख रहे थे वे मनका हथेली में रखते ही संख्या बोल रहे थे। कुछ सलाह के बाद बच्चे सही–सही गिन रहे थे। वे मनका हथेली में रखने के बाद ही गिन रहे थे। इस गतिविधि में भागीदारी करने में सभी बच्चे उत्सुक थे अतः सभी बच्चों को जोड़ियों में सामने आने का अवसर दिया गया। हमने 1 से 10 तक की वस्तुओं को गिनने का अभ्यास किया।

थोड़ी देर विश्राम के पश्चात पुनः गणित विषय पर काम शुरू हुआ। इस समय चित्र के माध्यम से छोटा–बड़ा, ऊपर–नीचे की अवधारणा को समझने का प्रयास हुआ। चित्र देखकर ज़्यादातर बच्चे छोटे व बड़े तथा ऊपर–नीचे समझ रहे थे। बच्चे संख्या के आधार पर कम व ज़्यादा को भी बता पा रहे थे। अनुमान क्षमता के विकास व कम–अधिक को और स्पष्ट करने के लिए एक गतिविधि की गई। मैंने स्लेट, बच्चों की कॉपी, कक्षा पुस्तकालय की पुस्तकों, प्लास्टिक के कुछ ब्लॉक्स को निकाला और हम सब गोल घेरा बनाकर बैठ गए। अब मैं अपने दोनों हाथों में कुछ वस्तुएँ उठाकर बच्चों से पूछता, "बताओ किस हाथ में अधिक वस्तुएँ हैं?" सभी बच्चे अपना–अपना विचार बोल रहे थे। कभी-कभी मैं एक ही प्रकार की वस्तुओं को उठाता था तो कभी अलग–अलग वस्तुओं को। इस प्रकार से वस्तु उठाना व बच्चों से संख्या पूछना कई बार हुआ। इसी बीच मैंने बच्चों को बताया कि कौन-सी वस्तु अधिक है इसे कैसे जान सकते हैं और उन्हें जोड़ी बनाकर कम या अधिक को ज्ञात कर लेने की युक्ति भी बता दी। जोड़ी बनाने के काम में अनेक बच्चे मदद कर रहे थे।

पिछले तीन दिनों से भोजन के पश्चात बच्चों को लगभग पन्द्रह मिनट तक फ्री प्ले का समय दिया गया। इस दौरान

बच्चे विभिन्न खेल सामग्रियों (ब्लॉक्स, किचन सेट आदि) से व्यक्तिगत रूप से व छोटे–छोटे समूहों में खेलते हैं। यह समय भी महत्त्वपूर्ण उद्देश्य का हिस्सा है क्योंकि इस दौरान अलग–अलग गाँवों से आए बच्चों का आपस में परिचय होता है व मित्रता बढ़ती है। शारीरिक विकास को बल मिलता है क्योंकि बच्चे दौड़ते-भागते हैं, ब्लॉक्स को जोड़ते-तोड़ते हैं, कुछ नया बनाने के लिए सोचते हैं और किचन–डॉक्टर के सेट से खेलते समय विभिन्न पात्रों का अभिनय करते हैं। वे न जाने ऐसे कितने क्षेत्रों में काम करते हैं जो इस उम्र में सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक हैं।

एक बच्चा, जो कक्षा में सबसे छोटा है दिन भर सक्रिय रहता। अपने अवलोकन में मैंने पाया कि वह किसी भी काम को बीस-तीस सैकण्ड से अधिक समय तक एकाग्र होकर नहीं करता है। वह हर समय अलग–अलग काम करने के लिए उत्सुक रहता है। वह अभी बहुत ही कम बातें करता है, अनेक बार पूछने पर एकाध शब्द में कुछ बोलता है। मैं उसे इधर–उधर भागते व धक्का-मुक्की करते देखता। मुझे लगा कि उसकी एकाग्रता बढ़नी चाहिए, हाथों की पकड़ में मज़बूती आनी चाहिए, उसे सन्तुलन बनाना और गम्भीरता से सीखना आना चाहिए। तो मैंने उसके लिए एक गतिविधि सोची।

मैंने उसे पास बुलाकर बैठाया और वही मनके दिए जिन्हें हमने भोजन के पहले गिना था। लगभग बीस मनके थे। मैंने उससे कहा कि इन मनकों को एक के ऊपर एक रखना है। मैंने उसे करके भी दिखाया। वह उत्साह से काम में जुट गया। उसके प्रयास देखने लायक थे। कभी झुककर, कभी लेटकर, कभी घुटने के बल बैठकर, कभी हाथों तो कभी पैरों में रखकर वह मनकों को जमाने लगा। पर वह मुश्किल से दो-तीन मनके ही एक के ऊपर एक रख पाया। लगभग दस मिनट तक उसने ख़ूब हाथ–पैर मारे। उसके बाद वह परेशान हो गया और काम छोड़कर भागने के लिए तैयार हो गया था। तो मैंने उसके लिए दूसरा काम तैयार किया। मैंने उसे कहा कि इन मनकों को रस्सी में पिरोए। फिर उसी उत्साह के साथ वह काम में लग गया। हालाँकि इस बार का काम पहले से कुछ आसान था परन्तु मुसीबत यहाँ भी उसका पीछा नहीं छोड़ रही थी। रस्सी का किनारा काफ़ी फैला हुआ था और मनके के छेद में आसानी से नहीं जा रहा था। उसने मनके में रस्सी डालने के लिए एड़ी–चोटी एक कर दी। आख़िरकार उसकी मेहनत रंग लाई और एक समय के बाद वह अपनी कोशिश में कामयाब रहा। काम पूरा होने के बाद मैंने भी सुकून की एक गहरी साँस ली।

इसके बाद गतिविधि बदलते हुए मैंने सभी बच्चों से एक–एक कविता सुनी, प्रत्येक बच्चे की कॉपी में उसकी रुचि व क्षमता अनुसार होमवर्क लिखकर दिया। दिन भर की धमा-चौकड़ी, उछल-कूद, भागमभाग से तन और मन थककर चूर हो गया। कक्षा के बाद मुझे शान्ति व आराम की आवश्यकता थी जो किसी–किसी दिन ही नसीब हो पाता है, क्योंकि कक्षा के बाद अगले दिन की तैयारी करने की बाध्यता हो जाती है। सफल कक्षा के लिए सफल और व्यावहारिक योजना बनाना अति आवश्यक होता है। बच्चों का प्यार और कुछ करने की इच्छाशक्ति काम करने की ऊर्जा देते हैं तभी तो मन से काम करना आसान हो जाता है। आज का दिन मुझे भी काफ़ी अच्छा लगा। लगता है मैं अपने उद्देश्य में धीरे–धीरे आगे बढ़ रहा हूँ और बच्चों के काम व प्यार से मुझे सफलता अवश्य मिलेगी।

गजेन्द्र कुमार देवांगन विज्ञान में स्नातक हैं और उन्होंने हिन्दी साहित्य में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की है। उन्होंने डीएड भी किया है। वर्तमान में वे अज़ीम प्रेमजी स्कूल, धमतरी, छत्तीसगढ़ में शिक्षक के रूप में कार्यरत हैं। इससे पहले वे शासकीय प्राथमिक शाला में बारह वर्षों तक अध्यापन करते रहे हैं। हिन्दी भाषा के साथ-साथ बच्चों के लिए चित्र, खेल, कविता, कहानी, गतिविधि बनाने में उनकी विशेष रुचि रही है। उन्हें पाठ्यपुस्तक की कविताओं को लयबद्ध करके ढोलक-डफली बजाते हुए बच्चों के साथ गाना, नाचना पसन्द है। उनसे gajendra.dewangan@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।